Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

September-2019 Special Issue - 197(B)

Emerging Innovative Trends in Higher Education
An Interdisciplinary Approach

Guest Editor :
Dr. M. N. Gaikwad
Principal
Gopikabai Sitaram Gawande Mahavidyalaya, Umarkhed
Dist. Yavatmal (M.S) India

Executive Editor -
Dr. K. B. Shirse
Head, Dept. of History,
Gopikabai Sitaram Gawande Mahavidyalaya, Umarkhed
Dist. Yavatmal (M.S) India

Associate Editors -
Prof. A. S. Joshi
Dr. V. R. Jiwatode
Dr. U. N. Patil
Dr. V. S. Ingle
Dr. K. D. Bompliwar
Prof. S. S. Pachkudke

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar (Yeola)

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

412

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Swatidhan Publications

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

ISSN : 2348-7143
September-2019

107	शेतकरी आत्महत्या : कारणे व उपाय	डॉ.रामकिशन चाटे	497
108	उच्च शिक्षणाचा पाया गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षण	श्री.अवधुत वानखेडे	501
109	सत्यशोधक पंढरीनाथ पाटील यांचे सामाजिक कार्य	डॉ.के.बी.शिरसे	506
110	विशेष गरजा असलेल्या बालकांच्या अधिकारात शिक्षणाची भूमिका	डॉ.जयश्री देशमुख	509
111	दारिद्र्याचे निर्धाकार व दारिद्र्याचे परिणाम	प्रा. कु.एस.एच.उजाडे	513
112	विश्वविद्यालयातील शैक्षणिक पद्धती	प्रा. क्रांती मुनेश्वर	519
113	शेतकरी आत्महत्या कारण आणि जबाबदारी	प्रा.पी.एन.संधारी	523
114	वऱ्हाडातील ख्रिश्चन मिशनरीचे दलित चळवळीतील योगदानाचे विश्लेषण	डॉ.के.बी.शिरसे, डॉ.व्ही.एस.इंगळे,डॉ.आर.एच.बुटले	526
115	बहुजनांच्या सामाजिक शैक्षणिक प्रगतीत भाऊसाहेब डॉ.पंजाबराव देशमुखांचे योगदान	डॉ.के.बी.शिरसे, प्रा.एस.बी. वाघमारे, डॉ.व्ही.एस.इंगळे	529
116	मानवीमूल्ये आणि साहित्य	शिवाजी मोतीबोने	533
117	भारतीय अर्थव्यवस्थेत कृषीची भूमिका	प्रा. मिलिंद ढाले व डॉ. उषा पाटील	538
118	ग्राम जीवनाचे प्रत्ययकारी चित्रण करणारे लेखक : गणेश आवटे	प्रा.संध्या जंजाळ	541
119	पंचायतराज व्यवस्थेत महिला सहभाग व अडचणी	प्रा.राखी इंगळे	543
120	मानवी मूल्ये आणि साहित्य	डॉ.युवराज मानकर	547
121	वंचित घटक महिला सबलीकरणात शासनाची भूमिका	प्रा.ए.एम.काळबांडे	553
122	इतिहासाचे पुनर्लेखन आणि दृष्टीकोन	डॉ.संदिप डोंगरे	556
123	एकविसाव्या शतकात उच्चशिक्षणातील उभरत्या शिक्षण पद्धती	सुनिल थोरात	560
124	ग्रामीण महाराष्ट्रातील उच्च शिक्षणाची सद्यस्थिती	प्रा.दत्तात्रय ढवारे	566
125	शिक्षणामध्ये मानवाधिकाराचे उपयोजन	प्रा.प्रमिला बोरकर	571
126	ग्रामीण शिक्षण : समस्या व सुधारणा	डॉ.सुनिल चकवे	575
127	बदलत्या शिक्षण पद्धतीमध्ये कुमारावस्थेतील विद्यार्थ्यांच्या अभ्यासवयी विकसनातील घटक	डॉ.विनय चव्हाण	579
128	इतिहास लेखनातील नवा विचार प्रवाह 'सबाल्टर्न इतिहास'	प्रा.सुरेंद्र बोरकर	583
129	विदर्भातील विशेष प्रश्न	प्रा.विजय गावंडे	586
130	भाषा आणि साहित्यातील नवे प्रवाह	डॉ.अनिलकुमार दडमल	691
131	पंढरीची वारी : एक अध्यात्मिक व सामाजिक चळवळ शोध व बोध	डॉ.हरिदास आखरे	695
132	उच्च शिक्षा की उत्पत्ती, विकास और बदलाव	डॉ.व्ही.बी.चांदजकर	698
133	महिला शिक्षा : आज की सामाजिक आवश्यकता	डॉ.भारती देशमुख	602
134	भारतीय इतिहास लेखन में सबाल्टर्नवादी विचारधारा	प्रा.वाय.एस.राजपूत	605
135	प्रशासन में नैतिकता	प्रा.एस.आर.सामृतवार	608
136	उर्दू साहित्य में नया रुझान	प्रा.मोहम्मद असरार	611
137	मानवाधिकारोंके अंमल में उच्च शिक्षा की भूमिका	प्रा.विजय गावंडे	614

Our Editors have reviewed papers with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.

- Chief & Executive Editor

413

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 197(B) : Emerging Innovative Trends in Higher Education
ISSN : 2348-7143
September-2019

उच्च शिक्षा की उत्पत्ती, विकास और बदलाव

प्रा. डॉ. व्ही. बी. चांदजकर
(राज्यशास्त्र विभाग प्रमुख)
एम. एस. गोटे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, वाशिम

उच्च शिक्षा का अर्थ :-

उच्च शिक्षा का अर्थ है सामान्य रूप से सबको दी जानेवाली शिक्षा के उपर किसी विशेष विषय या विषयी में विशेष, विशद तथा सुक्ष्म शिक्षा। यह शिक्षा के उस स्तर का नाम है जो विश्वविद्यालयों, व्यावसायिक विश्वविद्यालयों, कम्युनिटी महाविद्यालयो, लिरल आर्ट कॉलेज एंव प्राद्योगिक संस्थानो आदि के द्वारा दी जाती है। प्राथमिक एवं माध्यमिक के बाद यह शिक्षा का तृतीय स्तर है। जो प्राय ऐच्छिक होतो है। इसके अंतर्गत स्नातक एंव व्यावसायिक शिक्षा एंव प्रशिक्षण आदि आते है।

ऐसी शिक्षा का स्वरूप विशदता के साथ भारत वर्ष में प्रतिष्ठित हूवा था। उच्च शिक्षा देणेवाले भारतीय गुरूकुलो की बडी विशेषता यह थी की उनमें प्रारंभीक शिक्षा के लेकर उच्चतम शिक्षा शिष्याध्यापक प्रणाली से दी जाती थी। सबसे उपर के छात्र अपने से नीचे वर्ग के छात्रासे पढाते थे और अपने से नीचे वाले को यद्यपी ब्राम्हण, क्षत्रिय और वैश्य के पुत्र ही भर्ती के लिए जाते थे और वर्ण के अनुकुल ही बालको को शिक्षा भी दी जाती थी। तथापी नित्यधर्म, स्वच्छता, शील और शिष्टाचार की शिक्षा प्रत्येक छात्रा को दी जाती थी और प्रत्येक छात्र को गुरूकुल में रहकर आश्रम का समस्त कार्य स्वयं करना पडता था। कुछ गुरूकुल तो इतने बडे थे की वहॉ एक कुलपती, दससहस्त्र ऋषियो और ब्रम्हचारीयों का अन्य दानादि देकर उनको पढने का प्रबंध करते थे। छात्र भी अपने सामर्थ्य के अनुसार गुरूदक्षिणा देते थे। कोई भी राजा हो इन गुरूकुलो के प्रबंध में हस्तक्षेप नही करता था। इन गुरूकुलो का प्रारंभ वास्तव में उन परिषोदो से हूवा जिनमें ४ से लेकर २१ तक विव्दान और मनीषी किसी नैमित्तीक, सामाजिक या धार्मिक समस्या पर व्यवस्था देणे के लिए एकत्र होते थे। कुछ गुरूकुलो ने वर्तमान सावास विश्वविद्यालय रूप धारण कर लिया था। इन गुरूकुलो में वेद, वेदांग, दर्शन, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि सभी विषयों को उच्चतम शिक्षा दी जाती थी और जब छात्र, सब विद्याओंमें पूर्ण निष्णात हो जाता था तभी वह स्नातक हो पाता था। ब्राम्हणों को यह छुट थी की वे चाहे तो जीवनभर विद्यार्जन करते रहे।

युरोप में मिस्त्री की सभ्यता सर्व प्राचिन मानी जाती है। किंतू वहॉ की उच्च शिक्षाप्रणाली का स्पष्ट विवरन नही मिलता। बावल, मसुरिया के निवासियों तथा हिंब्रू और फिनीसी लोगो में राजशास्त्र, नीतिशास्त्र, ज्योतिष और भूगोल की उच्च शिक्षा गिने चुने लोगो को ही दि जाती थी। भूतान में सौंदर्य की उदात भावना के साय व्याकरण, काव्य, भाषा, शैली, अलंकारशास्त्र, संगीत, गणित, भौतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र और राजनिती की शिक्षा दी जाती थी। एक एक व्यक्ती विषय पंडित था। उसी के पास युवक को शिक्षा प्राप्त करणे के लिए जाणा पडता था। स्पार्टा के लोगो को केवल युध्द की ही शिक्षा मिली, अन्य विषयो का पूर्ण अभाव रहा। वास्तव में एथेंन्स ही युनानी उच्च शिक्षा का विद्यानगर था। जहॉ सुकरात, जेनोफन, अरस्तू जैसे विद्वान शिक्षाशास्त्री और दार्शनिक विद्यमान थे। जव रोमवालो ने यूनान का यह प्रभाव पडा की वहॉ भी इतिहास, विज्ञान दर्शन की उच्चशिक्षा दी जाने लगी जिसके प्रभाव से सिसरो, सैनेको जैसे शिक्षणशास्त्री और वक्ता

414

ISSN : 2348-7143
September-2019

उत्पन्न हूए। तथा कुछ ही समय में उच्च शिक्षा के अनेक विद्यालय भी खुल गये किंतू रोम साम्राज्य के छिन्न भिन्न होने साथ ही यूनान और रोम की संपूर्ण शिक्षा पध्दती समाप्त हो गई।

इसाई मठो में पहले धर्मनिरपेक्ष और प्रार्थना के साथ पढना, लिखना, गाना, पूजा करना और गणित की शिक्षा दी जाती थी किंतू इसके पश्चात वहाँ विद्यात्रयी को मिलाकर सात ज्ञान विस्तारक कलमो के शिक्षणक्रम चला और तभी से इन शास्त्रो के लिए शब्द का प्रयोग चल पडा जो अजकल भ्रामक रूप से हमारे विश्वविद्यालयों की उपाधि प्रयूक्त हो रहा है। युरोप में प्रारंभ में कुछ विद्यार्थी किसी विशेष विद्या के आचार्य के पास अध्ययन के लिए सालेरनो में भेषज्यविद्या के लिए या बोलोना में न्यायनीति शिखने के लिए। इस प्रकार दक्षिण युरोप में बोलोना के आदर्श पर विश्वविद्यालय खुले और उत्तर में पेरिस के आदर्श पर। इनके अतिरिक्त एक शिक्षणाचार्य का प्रमाणपत्र भी था। जो शिक्षक होणे के अनुज्ञापत्र समझा जात था। धीरे धीरे विश्वविद्यालयो ने वर्तमान रूप धारण किया। इनमें उच्चतम शिक्षा का अर्थ है हाई स्कुल के पश्चात महाविद्यालयों या व्यावसायिक संस्थाओ कॉलेज, मेडिकल कॉलेज, कला महविद्यालय, संगीत महाविद्यालय में दी जानेवाली शिक्षा जिसके लिए विश्वविद्यालय से उपाधि या राजकीय विभागो की और से परिक्षा लेकर प्रमाणपत्र दिये जाते है। उच्च शिक्षा देणे का अधिकांश कार्य विश्वविद्यालय ही करता है।

भारत का उच्च शिक्षा तंत्र :-

भारत का उच्च शिक्षा तंत्र अमेरिका, चीन के बाद विश्व का सबसे बडा उच्च शिक्षा तंत्र है। विगत ५० वर्ष में देश के विश्वविद्यालय संख्या में ११.६ गुना, महाविद्यालय में १२.५ गुना विद्यार्थी संख्या ६० गुना, महाविद्यालयो में शिक्षको की संख्या में २५ गुना बृध्दी हूई है। सभी को उच्च शिक्षा के समान अवसर सुलभ कराने की नीति के अंतर्गत संपूर्ण देश में महाविद्यालयों की संख्या उल्लखनीय वृध्दी हूई है और साथ ही उच्च शिक्षा की अस्थापना सुविधा पर विनियोग भी तदनूरूप बढा है।

RESEARCHJOURNEY

महत्व :-

उच्च शिक्षा पाने के बाद व्यक्ती बुध्दीजीवी बन जाता है और समाज में योगदान दे पाता है। उच्च शिक्षा पाने से व्यक्ती की सोच का दायरा बढता है। वह दूर दृष्टी प्राप्त कर पाता हैं। इसके साथ ह ीवह देश रास्ते पर लाया जा सके। उच्च शिक्षा पाने से महिलाए सशक्त होती है। वे दूसरी महिलाए के लिए प्रेरणा बनती है। इसके साथ ही दूसरी महिलाओं को रोजगार देकर बेरोजगारी की समस्या को दूर करती है। उच्च शिक्षा पाने के बाद महिलाओं का स्तर साधारण महिलाओं से अधिक बढ जाता है। वह अच्छे बुरे में फर्क कर पाती है। इस बारे में जॉर्ज वॉशिंगटन करवर ने कहाँ की शिक्षा स्वतंत्रता के स्वर्ण द्वार खोलने की कुंजी है।

स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद पिछले पांच दशको में देश में उच्च शिक्षा का क्षेत्र में उल्लखनीय प्रगती हुई है। स्वतंत्रता पूर्व देश में मात्र तीन विश्वविद्यालय थे। वही अब उनकी संख्या २५० के आसपास पहूंच चुकी है।

उच्च शिक्षा के निर्मित समर्पित इन संस्थानो में १८ भाषाओं विज्ञान, कला, वाणिज्य, चिकित्सा सहित शिक्षक प्रशिक्षण एंव अनेक व्यावसायिक महत्व के पाठयक्रमो की शिक्षा की व्यवस्था हैं। इन संस्थानो में प्रतिवर्ष लगभग ७५ लाख विद्यार्थी प्रवेश पाते है। फिर भी कई युवक युवतीयां उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती है। अतः अभी काफी संख्या में नए संस्थांनो को स्थापित करणे की आवश्यकता है।

415

उच्च शिक्षा में बदलाव :-

आज के समय के साथ उच्च शिक्षा को बदलने की एक बहस ही छिड गई है। इस बदलाव तथा अनेक संस्थानो की स्थापना के लिए सरकार को एक बहूत बडी पुंजी है की आवश्यकता है। जा वर्तमान समय मे संभव हो नही दिखता।

अतः उच्च शिक्षा का निजीकरण ही एक दुसरा विकल्प बचता है। यदि उच्च शिक्षा की गुणवता और उसकी व्यावहरिकता विचार किया जाय तो वर्तमान शिक्षाप्रणाली शिक्षित बेरोजगारी की बहूत बडी संख्या प्रत्येक वर्ष तैयार करती जा रही है।

प्रतिवर्ष ३-४लाख बेरोजगार के नाम रोजगार कार्यालय दर्ज हो रहे है। इसके अलावा बहूत ऐसे भी बेरोजगार होते है। जो इन कार्यालय में आपना नाम दर्ज ही नही करते। रोजगार के अवसर नही होने के कारण कई युवक दिशाहीन होकर गैर कानुनी काम और उन्मुख हो रहे है।

सरकारद्वारा उच्च शिक्षापर किए जा रहे व्यय की और देखा जाए तो यह स्पष्ट हो जाता है की सरकार का अधिक ध्यान देश की जनसंख्या को शिखित करने अथवा प्राथमिक शिक्षापर ही अधिक केंद्रित है। उच्च शिक्षा के लिए उच्च संसाधनो की कमी हमेशा से बनी रही है। चौथी पंचवार्षिक योजना के बाद से उच्च शिक्षापर भारी कटौती की जा रही है। चौथी योजना के दैरान उच्च शिक्षा पर कुल शिक्षा व्यय का २५ प्रतिशत भाग खर्च किया गया, वही अब नौवी योजना में मात्र १२ प्रतिशत रह गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ से प्रारंभ से शिक्षा में निजीकरण के प्रवेश का संकेत मिलने लगा। इस नीति मे उच्च शिक्षा संस्थानो का बेहतर रूप से संचालित करने के लिए चन्दा एकट्ठा करणा तथा इमारतो के रख रखाव एवं रोजमर्रा के काम मे आनेवाली वस्तुओं की पूर्ति में स्थानिय लोगो की सहायता की बात कही गई।

इस बीच विश्व बँकव्दारा विकसनशील देशो में शिक्षा के खर्च के पॅटर्न पर एक रिपोर्ट जारी की गई जिसमें सलाह दी गई की आर्थिक संसाधनो की कमी को देखते हुए शिक्षापर आनेवाला खर्च का एक बडा हिस्सा अभिभाव को पर डाला जाए। वर्ष १९९१ में ढाँचगत समायोजन के अंतर्गत नरसिम्हाराव सरकारने आर्थिक उदारीकरण को आकेंगे बढाया जिसमें स्पष्ट हो गया कि उच्च शिक्षा को विश्व बँक के सुझावों के अनुरूप ढाला जाएगा।

उसी दौरान खडी संकट की आड मे उच्च शिक्षा के बजट में यु. जी. सी. ब्दारा ३९ प्रतिशत की कटौती कि गई। तथा विश्वविद्यालय को निर्देश दिया गया की वे अपने संसाधन स्वयं जुटाने का प्रयास करे। केंद्र सरकार के निर्देशपर यु. जी. सी. ने १९९२ में सर्वोच्च न्यायालय के न्यायमुर्ती के पुनीया की अध्यक्षता मे एक उच्चस्तरीय समिती का गठन किया गया था। इ समिती का उद्देश भारतीय विश्वविद्यालयों उगाही के संबंध मे सुझाव देना था।

इस समितीने १९९३ में अपनी रिपोर्ट यु.जी. सी. को सोपी। इस रिपोर्ट में उच्च शिक्षा की निजीकरन के पक्ष में मत व्यक्त किया गया था। केंद्रीय विश्वविद्यालय में किस ढांचे की समीक्षा और सुधार संबंध मे गठित आनंद कृष्णण समिती की सिफारिशों से भी स्पष्ट हो गया की अब उच्च शिक्षा का खर्च अभिभावक को पर डालने की तैयार हो चुकी है।

इन सारी समितीयों की रिपोर्ट का सार यही है की उच्च शिक्षा पर खर्च वर्तमान आर्थिक परिप्रेक्ष में किमती राष्ट्रीय संसाधनो का उपव्यय है। इस प्रकार अब एक ही विकल्प बचा की निजी क्षेत्र के लिए उच्च

416

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 197(B) : Emerging Innovative Trends in Higher Education
ISSN : 2348-7143
September-2019

शिक्षा के दरवाजे खोल दिय जाय ताकि सरकार के पीछे हटने से होनेवाली क्षति की भरपाई हो सके। "पॉलिसी फ्रमवर्क फॉर रिमार्क्स इन एज्यूकेशन" नाम से २४ एप्रिल २००१ की मुकेश अम्बानी तथा कुमार मंगलम व्दारा व्यापार और उद्योग गठित प्रधानमंत्री की सलाहकार परिषद को उच्च शिक्षा पर एक रिपोर्ट सोपी गई। रिपोर्ट के मुताबिक इसे २०१५ के भारत की शैक्षणिक आवश्यकताओं की ध्यान में रखकर तयार किया गया है। इस रिपोर्ट के अनुसार २०१५ तक उच्च शिक्षा पर ४२ हजार करोड रूपय खर्च होंगे। इसके अतिरिक्त भारत सरकार को १५ नए संस्थानो के निर्माण में ११ हजार करोड की पूंजी लगानी पडेगी।

सारांश :-

सरकार के लिए केवल अपने बल पर इतनी पूंजी लगाना सम्भव नही है। इसलीय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में निजी और सरकारी क्षेत्र में क्रमशः ४० और ६० प्रतिशत निवेश की संस्तुति की गई है। इससे उच्च शिक्षा निश्चित तौर पर काफी महेंगी हो जाएगी और यह केवल धनाढ्य वर्गोतक के बच्चो के लिए ही सीमित होकर रह जाएगी।

संदर्भ:-

1. Committees & Commission in India, 1947-73 Page- 57
2. Current Trends In Higer Education, J. Mohanty, Page- 82
3. Introdution Of New Subject In Higer Education; Need Of Time, Mr. Anand Yashwant Raikwad, 2018 Page 7
4. Higer Education Through Tevelevision; The Indian Express, 2000, Page 37
5. National Education Policy Need More Extensive Reforms To Succeed, Financial Express, 13 Aug. 2019
6. Varsities To Write To UGC, The Hindu, 2 Aug. 2019

417